नारायण ध्वनि

ॐ नारायण, नारायण, नारायण।
लक्ष्मी नारायण, नारायण नारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

गज और ग्राह लड़े जल भीतर।
लड़त लड़त गज हारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

तिल भर सूंड रही जल ऊपर।
तब हरी नाम उचारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

गज की टेर सुनी रघुनंदन।
गरुड़ छोड़ पग धारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

चक्र सुदर्शन ग्राह सिर काट्यो।
गज के फंद छुडारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

भीलनी के बेर सुदामा के तंदुल।
रुचि रुचि भोग लगारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

दुर्योधन घर मेवा त्यागी।
साग विदुर घर पारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि।
यम के फंद छुड़ारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

जो नारायण नाम लेत हैं।
मात - पिता कुल तारायण।
ॐ नारायण, नारायण, नारायण।।

नाम निरंजन नीर नारायण।
रसना सिमरत पाप बिलाइण।।

नारायण सब माहि निवास।
नारायण घट-घट परगास।।
नारायण कहते नरक न जाये।
नारायण सेव सकल फल पाये।।

नारायण मन माहि आधार।
नारायम बोहित संसार।।
नारायण कहत जम भाग पिलाइण।।
नारायण दंत भाने डाइण।।

नारायण सद-सद बखसिंद।
नारायण किने सुख आनंद।।
नारायण परगट कीने परताप।
नारायण संत को माई-बाप।।

नारायण साध संग नारायण।
बारंबार नारायण गाइण।।
वसत अगोचर गुर मिल लही।
नारायण ओट नानक दास गही।।
दुख भंजन तेरा नाम जी।
दुख भंजन तेरा नाम।।
आठ पहर आराधिए।
पूरन सतगुरु ज्ञान।।

जित घट वसै पारब्रह्म।
सोई सुहावा थाऊँ।।
जम किंकर नेड़ न आवई।
रसना हरि गुण गाओ।।

सेवा सुरत न जाणियां।
ना जापै आराध।।
ओट तेरी जगजीवनां।
मेरे ठाकुर अगम अगाध।।

भए किरपाल गुसाईयां।
नठे सोग संताप।।
तती वाऊ न लगई।
सतगुरु रक्खे आप।।

गुरु नारायण दयो गुरु।
गुरु सच्चा सिरजनहार।।
गुरु तुठै सभ किछ पाइयां।
जन नानक सद बलिहार।।

जगदीश्वरजी (विष्णु जी) की आरती

जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, छिन में दूर करें।।
जय.।।

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तनका।।
जय.।।

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी।।।
जय.।।

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। जय.।।

तुम करुणा के सागर,तुम पालनकर्तो।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।।
जय.।।

तुम को एक अगोचर, सब के प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।।
जय.।।

दीन बन्धू दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओं द्वार पड़ा तेरे।।
जय.।।

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।
जय.।।